भूमिका

समय एक गतिशील प्रक्रिया है ो अपने आप को बदलते हुए आगे ब.ता है। समय के साथ समा ा में भी अनेक परिवर्तन आते हैं क्योंकि परिवर्तन संसार का नियम है। कुछ परिवर्तन स्थूल होते हैं तो कुछ परिवर्तन सूक्ष्म। ोतन मनुष्य इन परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से महसूस करता है तथा अपनी ोतना के माध्यम से समय के साथ समा ा में हो रहे परिवर्तनों का यथासंभव अपने लेखन कार्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। शेखर ोशी इसी प्रकार के एक प्रतिबद्ध लेखक हैं ो अपने समय में हो रहे सामा िक परिवर्तनों का यथार्थपरक ि ात्रण करते हैं।

शेखर ोशी अपनी समकालीन विसंगतियों एवं विडंबनाओं को न केवल प्रखरता के साथ अपनी कहानियों में र ाते हैं वरन् इन स्थितियों से सामान्य मनुष्य को नि ाात पाने के लिए क्रांति का भी आह्वान करते हैं। वे सामंती और रू.िवादी मान्यताओं से मुक्ति पाने का उपदेश देते हुए हमेशा आम आदमी के साथ खड़े हो ाते हैं। अपसंस्कृति के कारक तत्वों की तलाश करते हुए उसे पूँ ीवादी संस्कृति का अनिवार्य परिणाम माना तथा अपसंस्कृति के खतरों से आगाह किया।

समय और समा ा शेखर ोशी की र ाना की कसौटी है तथा अनुभव और प्रतिबद्धता ने उनमें प्रामाणिकता का रंग भरा है। इस कारण इस शोध प्रबंध का विषय मैंने "शेखर ोशी की कहानियों का समय और समा ा" निर्धारित किया है। यह विषय एक ऐसे कहानीकार के कहानी-संसार के वैशिष्ट्य को उद्घाटित करता है, ि ासमें मनुष्य और परिवेश के नितांत नये रूप और अप्रकाशित छवियाँ प्रकट हुई हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को अध्ययन की सुविधा एवं विषय-विश्लेषण की दृष्टि से उपसंहार के अतिरिक्त पाँ ा अध्यायों में विभाि ात किया गया है।

प्रथम अध्याय 'शेखर ोशी : व्यक्तित्व और कृतित्व' है। इसमें शेखर ोशी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परि ाय देते हुए उनके साहित्यिक सृ ान का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'शेखर ोशी की कहानियों का कथ्य और शिल्प' में उनकी कहानियों के कथ्य को सम ाते हुए शिल्प के तात्पर्य और स्वरूप के साथ उनकी कहानियों की भाषा और शैली का विश्लेषण किया गया है।

तृतीय अध्याय 'शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित आँ ालिकता का स्वरूप' में आँ ालिकता का अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा को स्पष्ट करते हुए आँ ालिकता के नियो ाक तत्व, अं ाल का नायकत्व, स्थानीय बोली, नायकत्व का लोप का विश्लेषण किया गया है साथ ही शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित आँ ालिकता के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

ातुर्थ अध्याय 'शेखर ोशी की कहानियों का समय और समा ा' है। इसमें समय के साथ समा ा में हुई क्रांतियों से समा ा किस तरह बदल रहा है, इसका विश्लेषण करते हुए शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित परिवर्तनों पर दृष्टिपात किया गया है। साथ ही सामाि ाक अव्यवस्था के विभिन्न रूपों को दिखाते हुए आर्थिक स्थिति, धार्मिक व्यवस्था के कारण समा ा एवं सामाि ाक समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है।

पं ाम अध्याय 'शेखर ोशी की कहानियों में वर्ग-संघर्ष' है। इसमें वर्ग की शाब्दिक व्युत्पत्ति और परिभाषा पर प्रकाश डालते हुए समा ाशास्त्री वर्ग विभा ान और वर्ग-संघर्ष पर विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही

शेखर ोशी ने किस प्रकार विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों की मानसिकता और संघर्ष को दिखाया है इसका विश्लेषण किया गया है।

इस शोध प्रबंध के विषय ायन में प्रो.सुवास कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शोध कार्य का मार्गदर्शन करने एवं मु ो प्रोत्साहित करने के लिए अपने शोध निर्देशक डॉ.श्यामराव के प्रति आभारी हूँ।

इस शोध लेखन में हैदराबाद विश्वविद्यालय की इंदिरा गाँधी मेमोरियल लायब्रेरी सामग्री संकलन में बहुत सहायक रही है। इस के साथ शोध के दौरान विषय को सम ाने, सामग्री ुटाने और आवश्यक परिवेश के निर्माण में अपने मित्र प्रणव कुमार ठाकुर और नगीनाबानो के प्रति विशेष रूप से आभारी हूँ। टंकन करके समय पर देने के लिए डॉ.राधा की विशेष आभारी हूँ।

विभागाध्यक्ष तथा विभाग के अन्य सभी गुरु ानों के प्रति आभार प्रकट करना ाहती हूँ िन्होंने मेरे ायनित विषय को स्वीकृति प्रदान कर मु ो प्रोत्साहित किया।

अंत में मैं अपने माता-पिता, भाई-बहन, सास-ससुर और विशेष रूप से मेरे पति प्रसाद ी के प्रति आभार प्रकट करती हूँ िनके आशीर्वाद एवं समर्थन से मु ो प्रेरणा मिलती रही।

श्रीलता कोत्तपल्ली